नवंबर 2020

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

किसान आंदोलन

अखिलेश की ललकार

डर गई सरकार

04

नेताजी का जन्मदिन समारोह

34

मेधा का सम्मान

32

R.N.I. No. 68832/97

समाजवादी पार्टी ने हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने का पूरा प्रयास किया है और आगे भी करती रहेगी। लेकिन कुछ तत्वों को हमारा यह प्रयास अच्छा नहीं लगता। सांप्रदायिक ताकतें माहौल खराब कर चुनावी लाभ लेने की कोशिश में लगी रहती हैं। समाजवादियों की जिम्मेदारी है कि वे जनता को साथ लेकर इन ताकतों के मंसूबों को नाकाम करें।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

नवंबर 2020

वर्ष 22| संख्या 01

प्रिय पाठकों,

समाजवादी बुलेटिन का यह नया अंक बदले हुए रंग-रूप और कलेवर में आपके हाथों में है। इसमें समाचार के साथ विचार का संतुलन बनाये रखते हुए आपके लिए पठनीय सामग्री को हर पन्ने पर समेटा गया है। हम निरंतर ऐसी ही सामग्री लेकर आयेंगे। आशा है आपको बुलेटिन का यह नया रूप पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

आस्था प्रिंटर्स, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

लोगों के दिलों में हैं आजम साहब — शख्सियत 40

04 कवर स्टोरी

अखिलेश की ललकार, डर गई सरकार

आयोजन 34

नेताजी का जन्मदिन समारोह

समाजवादी पार्टी ने 22 नवंबर को पार्टी के संस्थापक एवं संरक्षक, पूर्व रक्षा मंत्री एवं सांसद श्री मुलायम सिंह यादव का 81वां जन्म दिवस राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के विभिन्न जनपदों तथा अन्य राज्यों में भी समारोह पूर्वक मनाया।

32 संकल्प

मेधा का सम्मान

किसान आंदोलन

अखिलेश की ललकार

डर गई सरकार

केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा लागू किए गए तीन कृषि कानूनों के खिलाफ देश के किसान भारी गुस्से में हैं। इन काले कानूनों को वापस लिए जाने की मांग के साथ किसान लगातार धरने पर बैठे हैं। उनकी एक ही मांग है कि केन्द्र सरकार इन कानूनों को वापस ले लेकिन मोदी सरकार ऐसा न करने की जिद पर अड़ी है। किसानों की इस जायज मांगों का पूरा समर्थन करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने स्वयं सड़क पर उतर कर सरकार को ललकारा और गिरफ्तार भी हुए। उनके निर्देश पर समाजवादी पार्टी की किसान यात्राएं लगातार जारी हैं और इससे डरी भाजपा सरकार गैर लोकतांत्रिक तरीकों से दमन चक्र चला रही है लेकिन जोश से लबरेज समाजवादी किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष जारी रखे हुए हैं। पूरे घटनाक्रम पर पेश है **दुष्यंत कबीर** *की रिपोर्ट-*

किसानों की मांगों के समर्थन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में 7 दिसंबर से शुरू हुई किसान यात्राओं में कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

कन्नौज में पूर्व घोषित किसान यात्रा में शामिल होने से श्री अखिलेश यादव को प्रदेश सरकार के आदेश पर रोकने के लिए पुलिस ने उनके आवास के बाहर बाधाएं खड़ी की। श्री अखिलेश यादव को कन्नौज में आयोजित किसान यात्रा में ठठिया मंडी से तिर्वा के किसान बाजार तक ट्रैक्टर से जाना था। जब वह प्रस्तावित किसान यात्रा में शामिल होने निकले तो उनके आवास की घेराबंदी करके पुलिस ने उनकी फ्लीट भी रोक ली। फ्लीट में शामिल वाहन जब्त कर लिए गए।

लेकिन अखिलेश जी बाहर आकर पैदल ही चल पड़े। उन्हें जब आगे बढ़ने से रोका गया तो वे सड़क पर ही धरने पर बैठ गए। इस पर पुलिस ने धारा 144 के उल्लंघन का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया। लोकतंत्र की सभी मान्यताओं को ताक पर रखकर प्रशासन ने उनके साथ धक्का मुक्की तथा अभद्रता की और उन्हें गिरफ्तार किया।पुलिस द्वारा अवैध ढंग से रोके जाने पर श्री अखिलेश यादव ने लोकसभा के अध्यक्ष को पत्र भेजकर राज्य सरकार के अलोकतांत्रिक व्यवहार को और एक सांसद के रूप में विशेषाधिकार का हनन बताया और तत्काल हस्तक्षेप की मांग की ताकि लोकतांत्रिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार बहाल हो सके।

श्री अखिलेश यादव के साथ समाजवादी पार्टी के कई विधायक व नेता भी गिरफ्तार किए गए।

उनकी गिरफ्तारी ने किसानों, गरीबों की आवाज को कुचलने की भाजपा की नीयत का पर्दाफाश कर दिया। यह लोकतंत्र में प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों का हनन था। घमंडी सरकार ने जनता के अधिकारों और उसकी आवाज उठाने वालों को कुचलने में जरा भी लोकलाज की फिक्र नहीं की।

भाजपा सरकार ने अपनी हठधर्मीता दिखाते हुए श्री अखिलेश यादव को रोकने के लिए घटिया मानसिकता प्रदर्शित कर लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते हुए उन्हें पहले तो घर में ही नज़र बंद करने की कोशिश की और बाद में उन्हें गिरफ्तार कर एक सांसद के रूप में उनके विशेषाधिकार की भी अवमानना की गई। वे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के अतिरिक्त प्रदेश के पूर्व

मुख्यमंत्री भी हैं। उनके साथ पुलिस का धक्का मुक्की करना, अभद्र व्यवहार जनता ने देखा और

श्री अखिलेश यादव के लोकप्रिय व्यक्तित्व से सत्ताधारी दल घबराया हुआ है। उनके साथ अलोकतांत्रिक व्यवहार और उनकी राजनीतिक गतिविधियों को रोकने की कुचेष्टा संविधान विरोधी कृत्य थी। इसकी जनता में व्यापक प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। किसानों, नौजवानों की आवाज को कुचलने का भाजपा का प्रयास उनको ही भारी पड़ेगा। इसका खामियाजा भी भाजपा उठाएगी।

वह उसे बर्दाश्त नहीं करेगी।

सच्चाई यह है कि श्री अखिलेश यादव के लोकप्रिय व्यक्तित्व से सत्ताधारी दल घबराया हुआ है। उनके साथ अलोकतांत्रिक व्यवहार और उनकी राजनीतिक गतिविधियों को रोकने की कुचेष्टा संविधान विरोधी कृत्य थी। इसकी जनता में व्यापक प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। किसानों, नौजवानों की आवाज को कुचलने का भाजपा का प्रयास उनको ही भारी पड़ेगा। इसका खामियाजा भी भाजपा उठाएगी।

अखिलेश जी एवं समाजवादियों को रोकने के लिए सत्ता के इशारे पर पुलिस-प्रशासन जिस तरह बेसब्री दिखा रही थी उसने साफ कर दिया कि उनसे व उनके साथ जुड़े व्यापक जनसमर्थन से यह सरकार किस कदर डरी हुई है। दरअसल श्री अखिलेश यादव के आह्वान पर पार्टी की किसान यात्रा से डरे प्रशासन ने अपना दमन चक्र

चलाने में हद कर दी।

रात से ही समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों के घरों के बाहर पुलिस का पहरा बैठ गया था। सुबह होते-होते नेताओं की गिरफ्तारी शुरू हो गई। कई स्थानों पर पुलिस ने बर्बरता से लाठियां बरसाईं। तमाम नेताओं को घरों में नज़रबंद कर दिया गया। बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी गिरफ्तारी दी। जहां कार्यकर्ता निकले उन्हें जबरन बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया गया। लखनऊ में प्रदेश कार्यालय के बाहर पुलिस ने सुबह से ही छावनी बना दी थी। कार्यकर्ताओं को बाहर निकलने से रोका गया। पुलिस ने अभद्रता की और लाठीचार्ज किया। पुलिस कार्रवाई में कई कार्यकर्ता चोटिल हो गए हौसले पस्त नहीं हुए। अखिलेश जी की ललकार से पुलिस और

प्रशासन के दमन चक्र के बावजूद कार्यकर्ताओं का उत्साह हिलोरें मारता रहा। प्रदेश के तमाम जनपदों में समाजवादी पार्टी की ओर से किसान यात्राएं निकाली गईं।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की गिरफ्तारी की सूचना मिली तो कार्यकर्ताओं ने आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे को जाम कर दिया। लखनऊ समेत प्रदेश के प्रत्येक जनपद में कार्यकर्ता बड़ी संख्या में सड़कों पर धरने पर बैठ गए और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदेश की सड़कें समाजवादियों के नारों से गूंज उठी। लखनऊ महानगर के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हजरतगंज चौराहे पर धरना दिया। पुलिस के लाठीचार्ज में दर्जनों कार्यकर्ता घायल हो गए। जनपद फतेहपुर में प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, बदायूं में पूर्व सांसद श्री धर्मेन्द्र यादव के साथ पुलिस ने दुर्व्यवहार किया। श्री धर्मेंद्र यादव गिरफ्तार भी किए गए। कई नेता घरों में नज़रबंद किए गए। लेकिन समाजवादियों द्वारा किसान

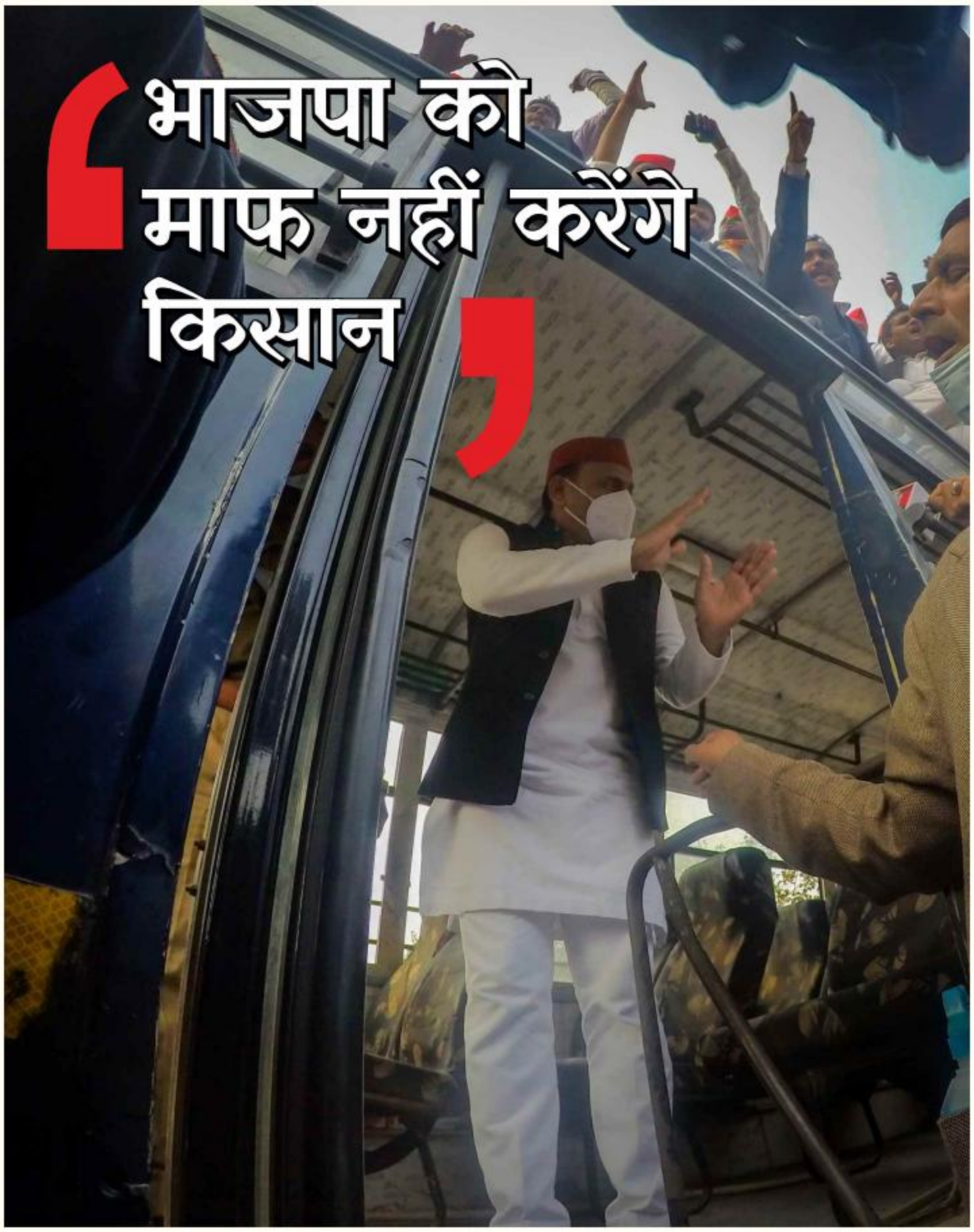

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा राज में जैसा अन्याय देश के अन्नदाता किसान के साथ हो रहा है वैसा आजाद भारत में कभी नहीं हुआ। खुले आसमान के नीचे ठण्ड में कांपते किसान सरकार से अपनी व्यथाकथा बताने को सड़क पर हैं लेकिन सरकार है कि उसके कान में जूं ही नहीं रेंग रही है। अपने मन की बात देश को जबरन सुनाने वाले किसान की कोई बात सुनने को तैयार नहीं है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि सड़कों पर ठिठुरते किसान आंदोलनकारियों की जायज मांगों को लेकर भाजपा सरकार हृदयहीन रवैया अपनाए है। किसानों की घोर उपेक्षा की जा रही है। इस पर जो वैश्विक प्रतिक्रिया आ रही है, उससे दुनिया भर में भारत की लोकतांत्रिक छवि को गहरी ठेस पहुंची है। भाजपा सरकार को शोषण करने से बचना चाहिए। सरकार को किसानों की बातें माननी चाहिए। उनकी आशंकाओं का निराकरण करने की जरूरत है। सरकार व्यर्थ हठधर्मी कर रही है। किसानों के

सैलाब के आगे कोई टिक नहीं पाएगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि किसान आंदोलन भारत के इस लोकतांत्रिक मूल्य की पुनः स्थापना का भी आंदोलन है कि सरकार के सभी फैसलों में आम जनता की भागीदारी होनी चाहिए, सरकार की मनमानी नहीं। किसानों को सरकार के जिन फैसलों से दुश्वारी है उनको समाप्त करने की मांग में अनुचित क्या है? सरकार जनता के लिए जनता द्वारा चुनी जाती है। देश की सबसे बड़ी पंचायत में जनमत की अवहेलना लोकतंत्र और संविधान की मूलभावना से ही खिलवाड़ है।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की हठधर्मी के कारण ही भारत में लोकतंत्र को बचाने के लिए देश का हर नागरिक भी आज किसान आंदोलन के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ता जा रहा है। भाजपा हताश है क्योंकि किसानों के साथ जनता भी जुड़ती जा रही है। 'किसान संग अवाम है हर नर-नारी और नौजवान, दम्भी सत्ता के खिलाफ एकजुट है पूरा हिन्दुस्तान'। भाजपा का एजेण्डा ही लोगों को झांसा देना है। सत्ता में आने के लिए उसने किसानों को कर्ज माफी, फसल की लागत का ड्योढ़ा दाम देने और सन् 2022 तक आय दुगनी करने का राग अलापा पर किया क्या? भाजपा सरकार का सच्चाई से दूर-दूर तक रिश्ता नहीं है।

भाजपा ने 2022 तक किसानों की आय दुगनी करने की बात की थी लेकिन अब कृषि कानून लाकर उन्हें कमजोर कर रही है। इन कृषि कानूनों से किसान की जमीन जब्त कर ली जाएगी। किसान बर्बाद हो जाएगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी किसानों के हितों के लिए प्रतिबद्ध है। समाजवादी सरकार में कुल बजट का 75 प्रतिशत किसान और गांव की प्रगति के लिए प्रावधान किया गया था। किसानों के लाभ की कई योजनाएं शुरू की गई थीं। जबसे भाजपा सत्ता में आई है किसानों के फायदे की समाजवादी सरकार की सभी योजनाएं बंद कर दी गई हैं।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार का आचरण और कार्य व्यवहार पूरी तरह किसान और कृषि विरोधी है। तथाकथित कृषि सुधार कानूनों के विरोध में किसानों के आंदोलन और भारत बंद का समाजवादी पार्टी ने पूर्णतया समर्थन किया है। इससे बौखलाई भाजपा सरकार ने समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों के खिलाफ दमनचक्र चलाकर अलोकतांत्रिक व्यवहार किया है। लोकतंत्र में विपक्ष द्वारा विरोध प्रदर्शन का दमन संविधान की मूल भावना का तिरस्कार करना है। इससे भाजपा का विद्वेषपूर्ण चरित्र उजागर होता है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने 2022 तक किसानों की आय दुगनी करने की बात की थी लेकिन अब कृषि कानून लाकर उन्हें कमजोर कर रही है। इन कृषि कानूनों से किसान की जमीन जब्त कर ली जाएगी। किसान बर्बाद हो जाएगा।

अखिलेश जी ने कहा कि किसान जिन मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे हैं उस पर सरकार क्यों नहीं कार्रवाई करती है? जो कानून किसानों के हित में नहीं है उन्हें बदलने में उसे क्या दिक्कत है। स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट क्यों नहीं लागू की जाती है? भाजपा जो कानून लाई है वह कृषि उजाड़ कानून है। भाजपा किसानों के हितों के बजाय कारपोरेट की संरक्षक है। सत्ता में आकर वह ज्यादा दम्भी और हठधर्मी हो गई है। भाजपा के रवैये से देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था संकट में घिर जाएगी। भारत का किसान भाजपा को कभी माफ नहीं कर सकता।

यात्रा जारी रखी गईं। प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल के नेतृत्व में किसान यात्रा नुनारा जहानाबाद फतेहपुर जनपद में 1931 के लगान विरोधी आंदोलन के शहीद स्थल से निकाली गई। नेता विरोधी दल श्री रामगोविन्द चौधरी ने भी बलिया में अपना विरोध जताया।

किसानों के भारत बंद को पूर्ण समर्थन

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 8 दिसंबर 2020 को किसानों के भारत बंद को

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं, नेताओं, पदाधिकारियों को किसानों के समर्थन में साइकिल यात्राएं निकालने ओर भारत बंद में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने के लिए बधाई दी।

समाजवादी पार्टी ने पूर्ण समर्थन दिया। प्रदेश के सभी जनपदों में समाजवादी कार्यकर्ताओं ने किसानों की मांगों के समर्थन में किसान यात्राएं निकालीं और बंद में भी भागीदारी की।

पुलिस की जगह-जगह रोक-टोक के बावजूद भारत बंद पर समाजवादी कार्यकर्ताओं ने विभिन्न जनपदों में जलूस निकाले, ट्रेनें रोकी, बाजार बंद कराया और सड़कों पर धरना दिया। समाजवादी कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए पुलिस ने बाधाएं खड़ी की और उन पर लाठीचार्ज किया। कई नेता-कार्यकर्ता पुलिस द्वारा निर्दयतापूर्ण शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर बल प्रयोग से

घायल हो गए। तमाम नेताओं को घरों में नज़रबंद कर दिया गया। समाजवादी पार्टी के सैकड़ों विधायकों, पूर्व विधायकों, पूर्व मंत्रियों एवं जिलाध्यक्षों, महानगर अध्यक्षों सहित हजारों कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। अधिवक्ताओं ने अदालतों में कार्य बहिष्कार किया। कई जगह बैलगाड़ी और ट्रैक्टर के साथ प्रदर्शन किया गया।

राजधानी लखनऊ में समाजवादी पार्टी के कई विधायकों ने विधान भवन स्थित चौधरी चरण सिंह के प्रतिमा स्थल तक पहुंच कर भाजपा की किसान विरोधी कुनीतियों के खिलाफ मौन धरना दिया। प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने फतेहपुर में देवमई ब्लाक में किसान साइकिल यात्रा का नेतृत्व किया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं, नेताओं, पदाधिकारियों को किसानों के समर्थन में साइकिल यात्राएं निकालने ओर भारत बंद में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री के इशारे पर समाजवादी पार्टी के नेताओं को घरों में नज़रबंद करना एवं उपर लाठीचार्ज और उनकी गिरफ्तारी अलोकतांत्रिक है। किसानों के संघर्ष में समाजवादी पार्टी साथ खड़ी रहेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा हताश है क्योंकि किसानों के साथ जनता भी जुड़ गई है। जब सत्ता दमनकारी हो जाती है तो आंदोलन को क्रांति बनते देर नहीं लगती है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कोविड-19 का बहाना भाजपा सरकार कर रही है जब भाजपा की रैलियां होती हैं तब इसका ध्यान क्यों नहीं होता है। यह भाजपा का दोहरा मानदण्ड है। वह विपक्ष के प्रति द्वेषभाव रखती है। भाजपा के विरुद्ध किसानों में गुस्सा है। भाजपा को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

किसानों के संघर्ष में समाजवादी पार्टी साथ खड़ी रहेगी। भाजपा हताश है क्योंकि किसानों के साथ जनता भी जुड़ गई है। जब सत्ता दमनकारी हो जाती है तो आंदोलन को क्रांति बनते देर नहीं लगती है।

किसान यात्रा में समाजवादियों का रेला

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर पूरे प्रदेश में लगातार निकली किसान यात्रा में समाजवादी पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं का रेला उमड़ा। पुलिस के भारी उत्पीड़न एवं कई स्थानों पर लाठी चार्ज के बावजूद किसान यात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं का हौसला नहीं टूटा। 14 दिसंबर को प्रदेश भर में धरना दिया गया।

किसानों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए समाजवादी पार्टी ने 7 दिसंबर से किसान यात्राएं आयोजित की। पहले दिन स्वयं पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को लखनऊ में धरना देने पर गिरफ्तार कर लिया गया था। किसान यात्राओं के तहत विभिन्न जनपदों में पैदल, साइकिल, ट्रैक्टर तथा बैलगाड़ी से समाजवादी कार्यकर्ताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा निकाली। कई स्थानों पर पुलिस ने इन यात्राओं को रोकने के लिए बल प्रयोग भी किया और सैकड़ों कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी की।

भाजपा सरकार ने अलोकतांत्रिक तरीके से कई प्रमुख नेताओं को घरों में नज़रबंद किया। इसके बावजूद प्रत्येक जनपद में समाजवादी कार्यकर्ताओं ने सरकारी बाधाओं के बाद भी बड़ी संख्या में यात्राएं निकाली। पुलिस के बल प्रयोग के बावजूद समाजवादी अपनी यात्राओं में सफल

किसानों के समर्थन में समाजवादी पार्टी मैदान में
पराली जलाने के मुकदमे समाप्त करो
किसान विरोधी कानून वापस लो
काला कानून वापस लो
किसान विरोधी बिल वापिस लो
किसान एकता जिन्दाबाद
जय जवान जय किसान
किसानो के कर्ज माफ करो
किसान आन्दोलन के समर्थन में समाजवादी पार्टी फिरोजाबाद
किसानों के साथ निर्दयता का व्यवहार बन्द करो-बन्द करो
नरेन्द्र मोदी, किसान विरोधी

रहे। नेताओं ने पदयात्रा के दौरान जनसंपर्क कर समाजवादी पार्टी की नीतियों, कार्यक्रमों का प्रचार किया। कई जिलों में समाजवादी नेताओं ने चौपाल लगाकर पार्टी कार्यक्रम के बारे में बताया। उन्होंने लोगों को समाजवादी पार्टी की नीतियों से अवगत कराने के साथ किसानों की मांगों के प्रति समर्थन का भी भरोसा दिलाया। कई जनपदों में किसान गोष्ठिया हुईं।

14 दिसंबर को किसानों के समर्थन में सभी जिलों में पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से धरना दिया गया। जिस पर पुलिस ने कई स्थानों पर बर्बरता से लाठीचार्ज किया और हजारों की संख्या में गिरफ्तारी की। सभी जनपदों में पार्टी के जिला तथा महानगर अध्यक्षों ने धरना-प्रदर्शन का नेतृत्व किया। हर जगह सैकड़ों की संख्या में लोग जुटे थे।

समाजवादी पार्टी की किसान यात्रा के अंतर्गत बांदा में पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री हसनउद्दीन सिद्दीकी ने कई गांवों में बैलगाड़ी पर किसान यात्रा निकाली। यह यात्रा किसानों के घरों, खेतों एवं खलिहान तक पहुंची और कृषकों को केन्द्र सरकार के काले कृषि कानूनों की असलियत बताई। यह काफिला गिरवां, संतूपुर, खोही, पिथौराबाद, मुरादपुर एवं जरर आदि गांवों में पहुंचा जिसका किसानों से उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

राजधानी लखनऊ में जिला तथा महानगर के पदाधिकारियों के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने जिला कार्यालय, कैसरबाग से जब कलेक्ट्रेट की ओर कूच करना चाहा तो पुलिस ने बल प्रयोग कर उन्हें रोक दिया। पुलिस के लाठीचार्ज में तमाम कार्यकर्ता घायल हो गए। पुलिस ने बाद में उन्हें गिरफ्तार कर लिया। नेता विरोधी दल श्री रामगोविन्द चौधरी ने घर पर पुलिस द्वारा नज़रबंद किए जाने का विरोध करते हुए किसानों के समर्थन में अपने गौतमपल्ली लखनऊ, स्थित आवास के बाहर धरना दिया। कई जिलों में प्रमुख नेताओं को नजरबंद या गिरफ्तार किया गया।

धरना कार्यक्रम पर पुलिस जुल्म की कड़ी निंदा करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर रोक लोकतंत्र की हत्या हो रही है। भाजपा सरकार चाहे जितना दमन और अत्याचार कर ले, अन्नदाता से अन्याय पर समाजवादियों का संघर्ष सड़क से लेकर सदन तक जारी रहेगा। किसान नाराज हैं और धरने पर बैठे हैं। आखिर ऐसी

TOURIST

कार्यालय जिलाधिकारी सुलतानपुर

OPPO A53
2020/12/10 15:06

हम किसान हैं।

युवजन सभा

ANMOL

स्थिति क्यों उत्पन्न हुई? श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2022 में प्रदेश में समाजवादी सरकार बनेगी। किसानों के हित के कदम उठाए जाएंगे। किसान को पूरा सम्मान और सुरक्षा मिलेगी। किसानों को अपमानित करने का भाजपा जो खेल खेल रही है उसका खामियाजा भी उसे भुगतना पड़ेगा। सत्ता के नशे में भाजपा संवेदनहीन बनती जा रही है।

किसान आंदोलन का नया दौर

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

भारत में किसान आंदोलन नए दौर में है। जो किसान सबसे बेचारा, कमजोर और बिखरे लग रहे थे उन्होंने उस सरकार के वार्ताकारों और खुद उस सरकार का पसीना छुड़ाए हुए हैं जो न सिर्फ अपने को सुपर बलशाली मानती है बल्कि जिसको किसानों की तरफ से सबसे कम प्रतिरोध की आशंका थी। लगातार धरने पर बैठे किसानों ने साफ कर दिया है कि तीनों कृषि कानूनों की वापसी की मांग को पूरा किए जाने से कम वे सरकार का कोई प्रस्ताव नहीं मानेंगे।

किसानों के आंदोलन के इस दौर की शुरुआत तो पंजाब के किसानों ने लगभग अकेले की लेकिन जल्दी ही इसे अन्य जगहों से समर्थन मिलना शुरू हो गया। उसी के बाद इसकी ताकत और इसके आन्दोलन की ताकत का भरोसा बढ़ता गया है और अब जिस तरह अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, शरद पवार, शिव सेना आदि ने खुला समर्थन देना शुरू किया है। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने तो गिरफ्तारी भी दी। लगता है कि पूरा मामला अब महज किसानों से जुड़े तीन काले क़ानूनों की जगह पूरी सरकार से जोर आजमाइश का बन गया है और अगर सरकार को ये तीन कानून वापस लेने के साथ न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी रूप देने और पराली कानून के दंड के प्रावधानों को वापस लेने जैसे कुछ बोनस भी देने पड़ जाएं तो हैरानी नहीं होनी चाहिए। जिन लोगों को इस कथन में कोई अतिशयोक्ति लगती हो उनको मोदी सरकार

द्वारा सत्ता संभालते ही भूमि अधिग्रहण कानून लाकर इसी तरह की जिद करने का इतिहास याद कर लेना चाहिए। तब भी इस बलशाली सरकार को किसानों और उनके समर्थकों ने धूल चटाई थी।

भूमि अधिग्रहण कानून की याद इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इन क़ानूनों की जगह उसे लाने की कोई जरूरत नहीं थी। उससे थोड़ा ही पहले यूपीए सरकार ने करीब सौ साल पुराने भूमि अधिग्रहण कानून को बदलकर एक ठीकठाक सा कानून ला दिया था। असल में मोदी सरकार का दुनिया के पूंजीवादी तंत्र से रिश्ता और देश के संसाधनों को उनके हवाले करने की बेशर्मी को समझने के लिए उससे अच्छा उदाहरण कम ही है। रेल, हवाई मार्ग, दूरसंचार, शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था को बेचना और निजी क्षेत्र के हवाले करने का कार्यक्रम उसी एक बड़े डिज़ाइन का हिस्सा है। इस सरकार ने पहले के सारे रिकार्ड

मोदी सरकार द्वारा सत्ता संभालते ही भूमि अधिग्रहण कानून लाकर इसी तरह की जिद करने का इतिहास याद कर लेना चाहिए। तब भी इस बलशाली सरकार को किसानों और उनके समर्थकों ने धूल चटाई थी।

और शर्म/झिझक को छोड़ते हुए हद ही कर दी है।

बीच कोरोना के दौर में कृषि कानून बदलना और श्रम कानूनों से छेड़छाड़ करना क्यों जरूरी लगा, इस बात को दूसरे किसी तरीके से समझा या समझाया नहीं जा सकता। सबको जान बचाने की पड़ी है और दुनिया भर की सरकारों में बैठे लोग किसी तरह अपनी जनता को इस वैश्विक संकट से निकालने का प्रयास कर रहे हैं तो हमारा कथित 'महाबलि' शासक अपने लिए दो विशेष विमान खरीदने, नया संसद भवन बनवाने और खेती को कारपोरेट सेक्टर के हवाले करने की जल्दबाजी में है और इसके लिए मीडिया के दुरुपयोग से लेकर संसदीय परम्पराओं की भी धज्जियां उड़ाने में उसे किसी तरह की शर्म नहीं है, लेकिन दिलचस्प यह हुआ कि बीच कोरोना काल में संसद के खास अधिवेशन में जल्दी-जल्दी बिल पास करने और राज्य सभा में तो बिना वोटिंग बिल पास कराने का खेल खेलकर मोदी सरकार खेती और किसानों को आजाद करने का,

उनको बिचौलियों से मुक्त करने का जो दावा कर रही थी और उसके हाथ की कठपुतली बना मीडिया इन कानूनों के नुक़सानदेह पक्ष को छुपा रहा था, वह सारा खेल किसान आन्दोलन ने पहले झटके में ही खत्म कर दिया।

शुरू में भाजपाई मीडिया मैनेजरों ने किसानों को दिग्भ्रमित, बाहरी शक्तियों से संचालित और राष्ट्र विरोधी बताने का अपना आजमाया फार्मूला लगाकर हतोत्साहित करना चाहा। किसान इन बातों की सफाई देने की जगह शांत भाव से अपनी बातें बताते रहे और अब इन क़ानूनों को काला बताना किसी को 'राष्ट्रद्रोह' नहीं लगता। देश के बाकी इलाके के किसानों और दुविधा वाले लोगों को आन्दोलन का खुला समर्थन करने में देर न लगी। इसी चलते अगुआई भले पंजाब के किसानों ने की लेकिन हर जगह से समर्थन आने लगा है। किसानों का कोई एक संगठन या कोई बड़ा संगठन बाकी नहीं रह गया है। सरकार

'महाबलि' शासक अपने लिए दो विशेष विमान खरीदने, नया संसद भवन बनवाने और खेती को कारपोरेट सेक्टर के हवाले करने की जल्दबाजी में है और इसके लिए मीडिया के दुरुपयोग से लेकर संसदीय परम्पराओं की भी धज्जियां उड़ाने में उसे किसी तरह की शर्म नहीं है।

से पहली ही बातचीत में किसानों के 34 प्रतिनिधि बैठे जो बढ़कर चालीस तक पहुंच गए। यह तब था जब सरकार के एक सूत्रधार अमित शाह ने योगेंद्र यादव और विजय जावन्धिया जैसे लोगों को किसानों के प्रतिनिधिमंडल में न रखने की बाजाप्ता पूर्व शर्त पर बातचीत शुरू की।

सरकार को उम्मीद थी कि इतने लोगों के बीच आसानी से फूट डाल ली जाएगी। जब पहली कोशिश में फूट न दिखी तो राकेश टिकैत से अलग से बात करके फूट की कोशिश हुई। कहना न होगा कि अभी तक यह कोशिश सफल नहीं हुई। शुरू में सरकार की योजना किसानों को विशाल और सुनसान निरंकारी मैदान में लाकर थका देने की भी थी। कुछ किसान तो दिल्ली प्रवेश के नाम पर इस चक्कर में आ गए लेकिन ज्यादातर ने दिल्ली के बार्डर जाम करके एक अतिरिक्त दबाव बनाने में सफलता हासिल की। फिर किसानों से बातचीत में न्यूनतम समर्थन

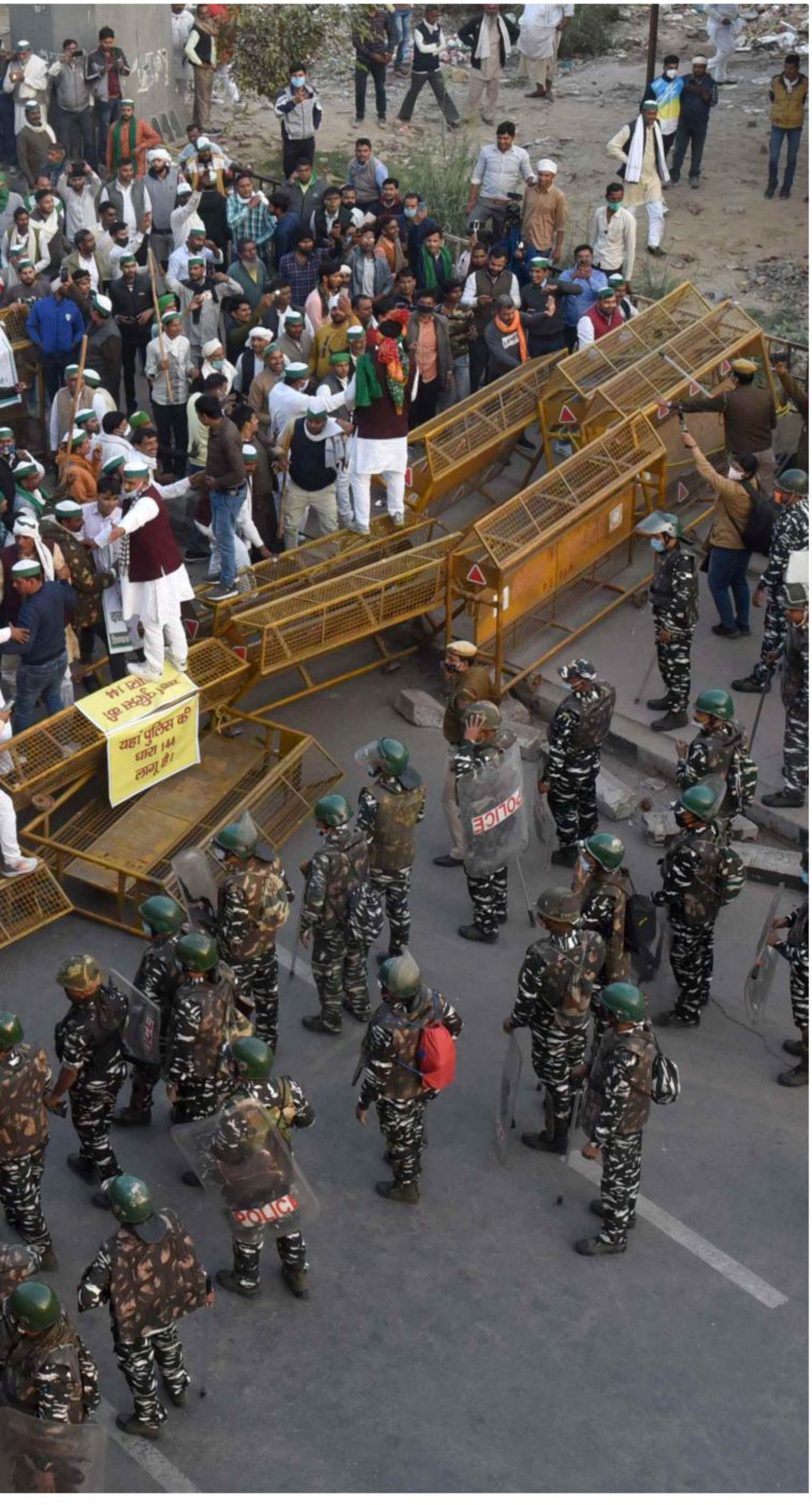

मूल्य और पराली कानून उठाने का चुग्गा डाला गया तो किसानों ने उसे तीन काले कानून हटाने के ऊपर जोड़कर सरकार की सांस अटका दी है। भारत बंद के जरिए भी बड़ा दबाव बनाया गया। किसानों को लेखकों, खिलाड़ियों, कलाकारों और देश-विदेश से समर्थन मिलना भी सरकार पर दबाव बढ़ाता जा रहा है। अब संघ बिरादरी की हिम्मत नहीं हो रही है कि वह अवार्ड वापसी गैंग जैसा जुमला चलाए।

चाहे कितना भी सेवा क्षेत्र आगे बढ़े, चाहे कितना भी आईटी क्रांति हो आखिर हमें खाना अनाज, फल-सब्जी, दूध-दही, मांस-मछली ही है, और यह चीज खेती-किसानी-पशुपालन से ही आनी है। आज जापान और यूरोप-अमेरिका जैसे देशों के समाज काफी हद तक खेती से हाथ झाड़े हुये हैं तो इसका कारण यह है कि वे बाहर के खेतों, फल-सब्जी के फार्मों और एनिमल रैंच से अपना काम चलाते हैं।हम या पूरी दुनिया इस व्यवस्था पर नहीं जा सकती और खाने-पीने की ज़रूरतों के साथ करोड़ों खेतिहरों के जीवन बसर का सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

किसान यह बताने में भी सफल रहे हैं कि समाज और अर्थव्यवस्था में उनका स्थान क्या है। उनका आन्दोलन, धरना-प्रदर्शन, उचित कीमतों की लड़ाई जैसी चीजें तो पहले सुनाई देती थीं पर किसान हड़ताल करें सड़क पर दूध, फल, सब्जी बिखेरने से लेकर मंडियों का बहिष्कार तक करें, शहरों में आपूर्ति रोकने की धमकी दें, यह स्थिति पहली बार हो रही है। सरकारी खरीद की गड़बड़ियां, सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य के बाजार के लिहाज से अधिकतम मूल्य बन जाने से हर खरीद केन्द्र पर भीड़-भाड़ और सरकारी कर्मचारियों द्वारा हर संभव तरीके से किसानों को भगाने के प्रयास का किस्सा हर कहीं का है। कहीं बोरियां कम पड़ने का बहाना है, कहीं गोदाम की दिक्कत तो कहीं किसान की पैदावार को घटिया बताकर लौटाने का सामान्य तरीका।

खेती का सीजन हो तो खाद-बीज का ब्लैक और फसल का सीजन हो तो खरीद केन्द्रों की मारामारी। किसान इसी दुश्चक्र में फंसा है। इसमें बुरी तरह फंस कर आत्महत्या तक करता है। अब वह आन्दोलन कर रहा है, हड़ताल कर रहा है। यदि गौर से देखें तो आत्महत्याओं का दौर शुरु होने के ठीक पहले देश में किसान आन्दोलनों का दौर भी चला। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में महेन्द्र सिन्ह टिकैट, कर्नाटक में नंजुदास्वामी, ओडिसा में किशन पटनायक, बंगाल में जुगलकिशोर रायवीर, महाराष्ट्र में शरद जोशी-विजय जावन्धिया, मध्य प्रदेश में सुनील, पंजाब में लाखोंवाल जैसे नेता उभरे, एक साथ भी हुये और भूमंडलीकरण की शुरुआत के साथ खेती में आ रहे बदलावों को कसूरवार बताते हुये खेती की नीतियों में बदलाव की मांग की।

नई नीतियों के जारी रहने और किसान आन्दोलन के बिखराव का यह असर आज सभी मानने लगे हैं कि करीब चार-पांच लाख किसानों ने आत्महत्या कर ली है। बीच में इसकी रफ्तार कुछ कम हुई थी, अब फिर तूफ़ानी हो गई है, पर जिस हिसाब से मरने वाले किसानों की संख्या बढ़ रही है, उसी हिसाब से शासन व्यवस्था ही नहीं बल्कि हम-आप भी इस सवाल पर संवेदनहीन बनते जा रहे हैं।

पहले यह माना जाता था कि किसानों के पास कोई बहुत ताकत नहीं है, पर कम से कम संख्या बल तो है ही। इसलिये जिस राज में किसान दुखी हो जाए उसका चुनाव में वापस आना मुश्किल हो जाता है। किसान और कुछ नहीं तो पांच साल बाद सरकार बदलने की क्षमता रखता ही है। इस बात के उदाहरण भरे पड़े हैं कि किसान की पेट पर चोट पड़ने के बाद तब राज करनेवाली सरकार नहीं बच पाई। यह बात शायद अटल बिहारी वाजपेयी सरकार की पराजय तक सही बैठती है जब इंडिया शाइनिंग के शोर और कहीं भी न दिख रहे विपक्ष के बावजूद लोगों ने एकदम अनपेक्षित जनादेश दिया। अटल बिहारी की जगह आए मनमोहन सिंह की सरकार ने खेती-पशुपालन से जुड़ी नीतियों को बदला हो यह तो नहीं हुआ लेकिन उसने किसानों को कर्जमाफी का तोहफा देकर हल्की राहत दी और छह-सात सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के जरिये ग्रामीण गरीबों को कुछ सीधा फायदा देने की कोशिश की। इससे किसानों और खेती को कोई दीर्घकालिक लाभ नहीं मिला लेकिन उनकी बेचैनी कम हुई।

मोदी सरकार ने आने के साथ ही भूमि अधिग्रहण कानून में बदलाव और उस पर सारा जोर लगाने से यह संकेत दिया कि उसकी नीतियां किसान विरोधी ही होने वाली हैं। यह क्रम अभी तक जारी है और जीएम फसलों की अनुमति तक चल रहा है, और शायद इसी से हौसला पाकर और अपनी साम-दाम-दंड-भेद की नीति पर भरोसा करके

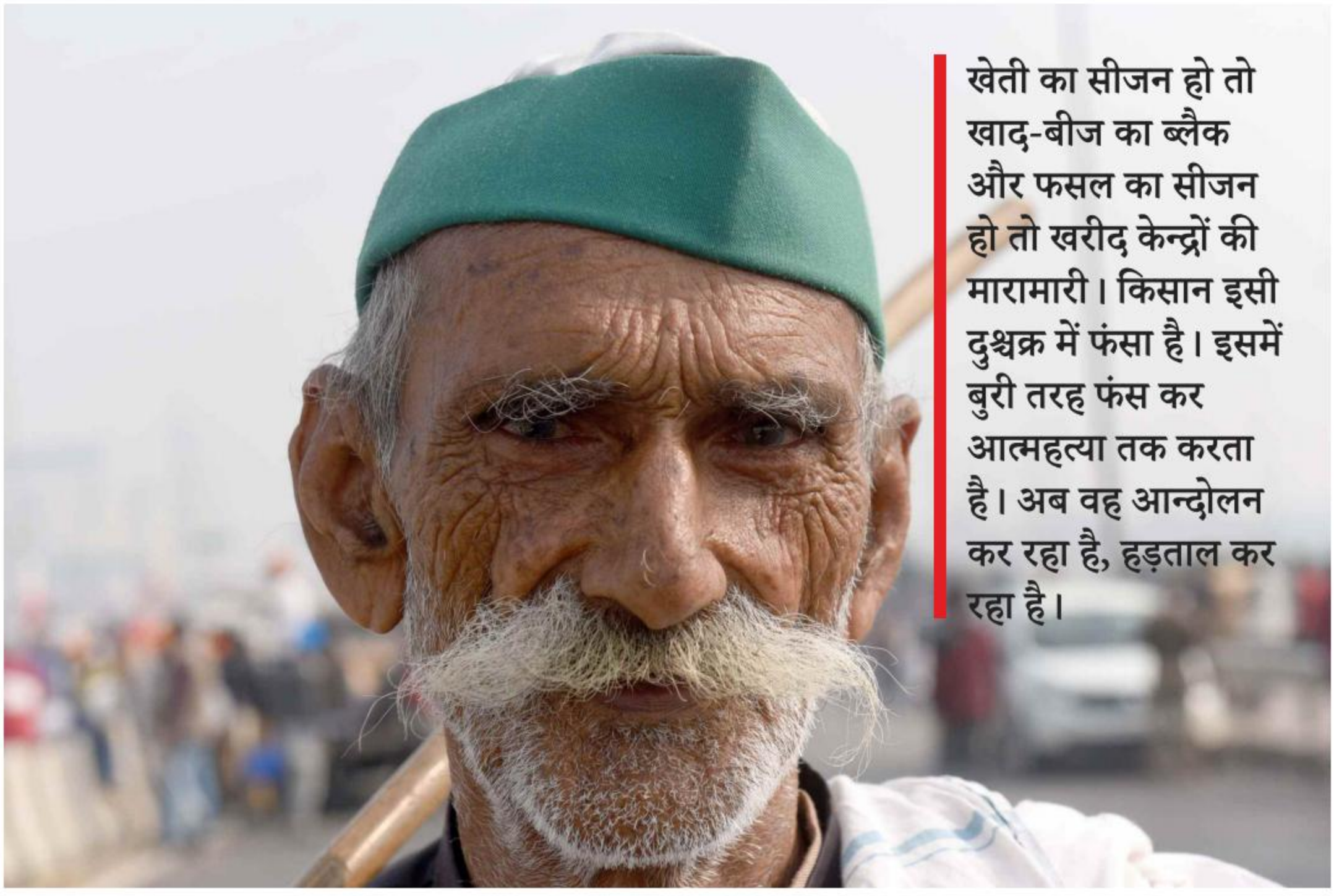

किसानों ने ठंड और कोरोना की परवाह न करके जैसा हौसला दिखाया है, अपने आन्दोलन में एकता रखी है, हिंसा से दूरी रखी है और जिस जज्बे से अभी तक की लड़ाई लड़ी है वह काफी उम्मीद जगाती है।

सरकार ने कोरोना के इस आफतकाल में तीन कानून बनाकर पूरी खेती कारपोरेट जगत को सौंपने और खेती से अपना हाथ समेटने का फैसला किया है, पर किसानों ने ठंड और कोरोना की परवाह न करके जैसा हौसला दिखाया है, अपने आन्दोलन में एकता रखी है, हिंसा से दूरी रखी है और जिस जज्बे से अभी तक की लड़ाई लड़ी है वह काफी उम्मीद जगाती है।

उनका इसपर ध्यान रखना जरूरी है कि किसी भी स्तर पर हिंसा को बर्दाश्त न करें वरना उसी दिन लड़ाई सरकार के हक में चली जाएगी। अनावश्यक रूप से निगेटिव कार्यक्रम लेने से बचना होगा। तीसरी बात यह कि राजनीति से परहेज की भी सीमा है। राजनीति से परे कुछ नहीं है। संघ से जुड़ा किसान संगठन जिस तरह असली मौके पर मुंह फेर कर गया है उससे भी यह समझ बढ़ी होगी। हां, अपना नेतृत्व राजनीतिबाजों को नहीं सौंपना है। फिर एक स्तर पर पारदर्शिता भी रखनी होगी क्योंकि खेती से जुड़े अस्सी नब्बे करोड़ लोगों के मसले को परदे के पीछे छिपाकर काम नहीं चल सकता। सरकार यह खेल चला सकती है क्योंकि उसका संगठन मजबूत है और उसके पीछे स्वार्थी तत्वों का समर्थन है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

अयोध्या के किसानों को अखिलेश जी पर भरोसा

बुलेटिन ब्यूरो

अयोध्या में बन रहे हवाई अड्डे के लिए जिन किसानों की जमीन जबरिया ली जा रही है उन्हें न्याय के लिए समाजवादी पार्टी पर भरोसा है। अयोध्या से आए किसान प्रतिनिधियों ने 12 नवंबर 2020 को लखनऊ आकर समाजवादी पार्टी मुख्यालय में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से मुलाकात की। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि किसानों के संघर्ष में पूरी समाजवादी पार्टी उनके साथ खड़ी है।

किसान प्रतिनिधियों ने श्री अखिलेश यादव से एयरपोर्ट निर्माण के लिए जबरन जमीन लिए जाने और उत्पीड़न करने की शिकायत की। किसानों ने कहा कि उन्हें मुआवजा भी नहीं मिला। श्री अखिलेश यादव से ग्राम सभा कुट्टिया, धरमपुर तथा गंजा के किसान प्रतिनिधियों ने मिलकर बताया कि बन रहे हवाई अड्डे के लिए उनके गांवों की जमींने सरकार जबरन हथिया रही है। उन्हें सहमति पत्र देने के लिए धमकियां दी जा रही है। मुआवजा देने में भेदभाव किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वे भाजपा सरकार और इसके अधिकारियों द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के खिलाफ संघर्षरत हैं और किसी भी हालत में उचित मुआवजा लिए बिना जमीन नहीं देंगे।

श्री यादव ने आश्वासन दिया कि समाजवादी पार्टी उनके साथ अन्याय नहीं होने देगी और समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर उन्हें 6 गुना ज्यादा मुआवजा दिलाया जाएगा। इस

अवसर पर पूर्व मंत्री श्री पवन पाण्डेय भी उपस्थित थे।

किसान प्रतिनिधियों में शामिल धरमपुर के श्रीराम लौट तिवारी ने कहा कि कुछ की जमीन पर 85 लाख रूपये का मुआवजा दिया जा रहा है तो कहीं 8 लाख रुपये बीघा मुआवजा बांटा जा रहा है। अधिकारी भूमि अधिग्रहण के लिए जबरन सहमति पत्र लेना चाहते हैं। इसके लिए उनके परिवार का भी उत्पीड़न हो रहा है। उन्होंने कहा कि अब वे सब सपरिवार भाजपा के खिलाफ समाजवादी पार्टी को वोट देंगे।

कुट्टिया ग्रामसभा के श्री रामसरन यादव ने कहा कि उनकी जमीन जबरन छीनी जा रही है। उनके पूर्वजों की खेती छिन रही है। धरमपुर ग्रामसभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र तिवारी ने भी अधिकारियों द्वारा अपमानित किए जाने की शिकायत की। उन्होंने बताया कि वे अपनी समस्याएं लेकर मुख्यमंत्री जी से भी मिले थे लेकिन इसके बाद तो अधिकारी और ज्यादा परेशान करने लगे हैं।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि किसानों के संघर्ष में पूरी समाजवादी पार्टी उनके साथ खड़ी है। समाजवादी पार्टी हवाई अड्डा बनाने, विकास और खुशहाली को रोकना नहीं चाहती है लेकिन जो किसान अपनी तकलीफ बताना चाहते हैं उनकी बात तो सुनी जानी चाहिए। अगर मुख्यमंत्री जी से मिलने के बाद भी उनकी दिक्कत दूर न हो तो फिर वे कहां जाए? जब ऐतिहासिक बजट का दावा है तो दिल क्यों छोटा है? क्या यह गरीबों किसानों की सरकार नहीं है?

उन्होंने कहा उनके मुख्यमंत्रित्वकाल में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे बना जिसमें किसानों ने खुशी से जमीन दी। पुराने अधिग्रहण अधिनियम में निर्धारित धनराशि से किसानों को ज्यादा मुआवजा दिया गया। सरकार के खजाने में पैसे की कमी नहीं होती है। उन्होंने कहा कि गरीब की पूर्वजों की जमीन जाएगी और पता नहीं भाजपा सरकार किसको मुनाफा कमाने के लिए हवाई अड्डा दे देगी इसलिए किसान को छह गुना ज्यादा मुआवजा दिया जाना चाहिए। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार बनने पर किसानों को सम्मान देंगे और छह गुना मुआवजा दिलायेंगे।

श्री यादव ने स्मरण दिलाया कि समाजवादी सरकार में अयोध्या के घाट सौंदर्यीकरण के साथ पम्पिंग स्टेशन, चौदहकोशी परिक्रमा पथ में वृक्षारोपण, पारिजात का पेड़ लगाया गया। अयोध्या में भजन स्थल बनाया गया था जहां से श्रीराम का धनुष तीर दिखता था। भाजपा ने दोनों को हटा दिया।

श्री अखिलेश यादव से भेंट करने वाले किसान प्रतिनिधियों में ग्रामसभा कुट्टिया के सर्वश्री रामसरन यादव, रामधीरज यादव, सालिक राम, ग्रामसभा धरमपुर के सर्वश्री वीरेन्द्र तिवारी, रामलोटन तिवारी, सुभाष तिवारी, शीतला प्रसाद तिवारी, दुर्गा प्रसाद तिवारी एवं गंजा ग्रामसभा के सर्वश्री केदार यादव ग्रामप्रधान, रामप्रकाश यादव, मुन्नू यादव आदि प्रमुख थे।

वहीं कानपुर के कुली बाजार क्षेत्र में जैन बिल्डिंग नाम के एक तिमंजिले मकान के गिरने से मृतक आश्रित तथा अन्य पीड़ित परिवारों का दुःख दर्द जानने के लिए श्री अखिलेश यादव ने 27 नवंबर को वीडियो कॉल के जरिए उनसे बात की और उन्हें आश्वासन दिया कि यदि प्रशासन ने उन्हें राहत नहीं दी तो उनकी लड़ाई समाजवादी पार्टी लड़ेगी। समाजवादी पार्टी ने मृतक के पीड़ित परिवार को 2 लाख रुपए की आर्थिक मदद की है।

मेधा का सम्मान

बुलेटिन ब्यूरो

एक ओर जहां भाजपा ने उत्तर प्रदेश में उसकी सरकार बने करीब चार साल हो जाने के बाद भी अपने चुनाव संकल्प पत्र 2017 में किए गए वादे के बावजूद लैपटॉप नहीं बांटा है, वहीं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव मेधावियों को लैपटॉप देकर मेधा के सम्मान का सिलसिला लगातार जारी रखे हुए हैं।

इसी कड़ी में दिनांक 17 नवंबर 2020 को श्री अखिलेश यादव ने आईएससी बोर्ड 2020 की इंटरमीडिएट परीक्षा में 99.5 प्रतिशत अंक (विज्ञान शाखा) पाने वाली संध्यिका श्रीवास्तव, पुत्री श्री गौरव कुमार श्रीवास्तव, को लैपटॉप देकर सम्मानित किया। संध्यिका लखनऊ के सिटी मांटेसरी स्कूल, महानगर शाखा की छात्रा है। इस अवसर पर संध्यिका की माताजी श्रीमती पल्लवी श्रीवास्तव जो शिक्षिका हैं, श्री दीपक रंजन तथा श्री निशांत सक्सेना शिक्षक भी उपस्थित थे।

वहीं दिनांक 19 नवंबर 2020 को श्री अखिलेश यादव ने कक्षा 12 में 99.75 प्रतिशत अंक लाने वाले मेधावी छात्र सुमित कुमार त्रिपाठी को भी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में सम्मानित कर लैपटॉप दिया। श्री सुमित कुमार त्रिपाठी सिटी मांटेसरी स्कूल गोमतीनगर के छात्र रहे हैं। उनके पिता जी श्री संजय कुमार त्रिपाठी तथा माता जी श्रीमती गायत्री देवी है एवं सीएमएस, गोमतीनगर की प्रिंसिपल श्रीमती आभा अनंत भी इस कार्यक्रम में शामिल रहे।

उल्लेखनीय है कि श्री अखिलेश यादव के द्वारा अपने मुख्यमंत्रित्व काल से अभी तक 20 लाख लैपटॉप मेधावी छात्र-छात्राओं को दिए जा चुके हैं और यह अभियान अभी भी जारी है। समाजवादी सरकार में जहां मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटॉप बांटे गए वहीं भाजपा सरकार ने अपने चुनाव संकल्प पत्र में वादा करने के बावजूद लैपटॉप नहीं बांटा है। समाजवादी सरकार ने तब 18 लाख से ज्यादा लैपटॉप बांटे थे। सरकार न रहने पर भी मेधावी छात्र-छात्राओं का समाजवादी पार्टी लगातार सम्मान कर रही है जबकि भाजपा अपने चुनावी वादे भूल गई है।

श्री अखिलेश यादव के द्वारा अपने मुख्यमंत्रित्व काल से अभी तक 20 लाख लैपटॉप मेधावी छात्र-छात्राओं को दिए जा चुके हैं और यह अभियान अभी भी जारी है। समाजवादी सरकार में जहां मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटॉप बांटे गए वहीं भाजपा सरकार ने अपने चुनाव संकल्प पत्र में वादा करने के बावजूद लैपटॉप नहीं बांटा है।

वह न तो लैपटॉप दे रही है और नहीं शिक्षा संस्थाओं में वाईफाई सुविधा दे रही है। जबकि भाजपा ने इसका भी चुनावी वादा किया था। भाजपा ने स्वामी विवेकानंद के नाम पर जो योजना शुरू करने का वादा किया था वह भी न कर महापुरूष के नाम के सम्मान को भी ठेस पहुंचाई है।

लैपटॉप वितरण

नेताजी के जन्मदिन पर संघर्ष का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने 22 नवंबर को पार्टी के संस्थापक एवं संरक्षक, पूर्व रक्षा मंत्री एवं सांसद श्री मुलायम सिंह यादव का 81वां जन्म दिवस राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के विभिन्न जनपदों तथा अन्य राज्यों में भी समारोह पूर्वक मनाया। इस अवसर पर गरीबों में फल एवं भोजन बांटा गया, रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। कई स्थानों पर केक काटकर तथा लड्डू बांटकर जन्मदिन मनाया गया।

समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की उपस्थिति में पंडित जी द्वारा स्वस्ति वाचन के पश्चात पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने श्री मुलायम सिंह यादव के दीर्घजीवन एवं स्वास्थ्य की शुभकामना की। इस अवसर पर नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव भी पार्टी मुख्यालय पहुंचे।

नेताजी ने अपना जन्मदिन मनाने के लिए सभी का धन्यवाद किया और आशीर्वाद दिया। उन्होंने आग्रह किया कि पार्टी कार्यकर्ता संगठन की मजबूती के लिए काम करें। सर्वश्री उदय प्रताप सिंह, अहमद हसन तथा माता प्रसाद पाण्डेय

तथा नरेश उत्तम पटेल ने श्री यादव के शतायु होने की कामना की। श्री अखिलेश यादव ने नेता जी को शाल ओढ़ाकर आशीर्वाद लिया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लखनऊ में पार्टी कार्यालय समेत जहां भी नेता जी के चाहने वाले हैं, जन्मदिन मना रहे हैं एवं उनके दीर्घायु होने की कामना कर रहे हैं उन सबको बधाई। नेता जी ने संघर्ष का तथा गांधी जी डाॅ0 लोहिया, डाॅ0 अम्बेडर के सिद्धांतो का जो रास्ता दिखाया है उसी से समाज में तरक्की खुशहाली आएगी। समाजवादी पार्टी उन्हीं के रास्ते पर चल रही है। हम सब उसके लिए कृत संकल्प हैं।

श्री अखिलेश यादव ने नेता जी के स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की कामना करते हुए कहा कि उनका आशीर्वाद हमेशा बना रहे। उन्होंने कहा हमें समझदारी से अपनी जिम्मेदारी निभानी है। हम सभी कार्यकर्ता हैं। हमें एकजुटता से काम करना है। समाजवाद के सपनों को पूरा करना है।

नेताजी के जन्म दिवस के अवसर पर समाजवादी पार्टी कार्यालय में सुबह से ही कार्यकर्ताओं तथा नेताओं का हुजूम जुटना शुरू हो गया था। अपने प्रिय नेता के

अभिनंदन में तमाम लोग पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं अन्य उपहार लाए थे। पार्टी कार्यालय के बाहर बैण्ड की टीम बधाई गीत बजा रही थी तो संपेरे बीन की धुन निकाल रहे थे। भांगड़ा के साथ ढोल भी बज रहे थे। चारों और उल्लास का वातारण था।

किसी ने केक और लड्डू बांटा तो किसी ने सब्जी पूड़ी, छोला-चावल तथा हलवा। यूथब्रिगेड ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। लखनऊ के सरोजनीनगर में प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल की उपस्थिति में जन्मदिन मनाया गया। उत्तराखण्ड में समाजवादी पार्टी के देहरादून

स्थित परेड ग्राउण्ड कार्यालय पर भी नेताजी का जन्म दिन सोल्लास मनाया गया। श्री यादव के जन्मदिन पर शतायु होने की कामना करते हुए प्रदेश अध्यक्ष श्री सत्य नारायण सचान आदि ने उनके संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला।

सपा मुख्यालय पर श्री मुलायम सिंह यादव से मिलकर बधाई देने वालों में सर्वश्री बलराम यादव, ब्रह्माशंकर त्रिपाठी, सरदार बलवंत सिंह रामूवालिया, राजकुमार मिश्र, नारद राय, उदयवीर सिंह, सुनील सिंह साजन, आनंद भदौरिया, अरविन्द कुमार सिंह, संजय लाठर, आशु मलिक, संतोष यादव सनी, डाॅ राजपाल कश्यप, लीलावती कुशवाहा, रामआसरे विश्वकर्मा, शंखलाल मांझी, विशम्भर प्रसाद निषाद, गीता सिंह आदि प्रमुख थे। इनके अलावा बड़ी संख्या में कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि नेता जी का आशीर्वाद हमेशा बना रहे। उन्होंने कहा हमें समझदारी से अपनी जिम्मेदारी निभानी है। हम सभी कार्यकर्ता हैं। हमें एकजुटता से काम करना है। समाजवाद के सपनों को पूरा करना है।

लोगों के दिलों में दर्ज है आजम साहब का नाम...

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं रामपुर के सांसद मोहम्मद आजम खान के प्रति भाजपा सरकार का पूर्वाग्रह से काम करने का सिलसिला लगातार जारी है। ताजा मामला आजम साहब द्वारा रामपुर में करवाए गए सौन्दर्यीकरण के कार्यों में जिला प्रशासन की ओर से मनमाने तरीके से परिवर्तन एवं उनका नाम बदलने का है। रामपुर में कई ऐसे निर्माणों को ढहाने या उनमें छेड़छाड़ करने व नाम बदलने की रामपुर में स्थानीय लोगों के बीच निंदा हो रही है। कहा जा रहा है कि आजम साहब द्वारा नगर विकास मंत्री रहते कराए गए विकास कार्यों के नाम तो सूबे की सरकार बदल लेगी लेकिन रामपुर के लोगों के दिलों में दर्ज आजम खान साहब का नाम भाजपा कैसे मिटा पाएगी!

श्री अखिलेश यादव के मुख्यमंत्रीत्व कार्यकाल वाली समाजवादी पार्टी की सरकार में नगर विकास मंत्री आजम खान ने रामपुर में गांधी समाधि के पास तीन गेट बनवाए थे। इन गेटों का उन्होंने नामकरण भी किया था। गांधी समाधि का सौंदर्यीकरण भी कराया गया था। इसके दोनों ओर इंडिया गेट की तरह बड़े-बड़े द्वार बने। प्रदेश की भाजपा सरकार के इशारे पर स्थानीय प्रशासन ने इन गेटों का नाम बदल दिया है। तत्कालीन नगर विकास मंत्री मोहम्मद आजम

जल्द छूटकर आएंगे आजम खान, पार्टी उनके साथ है

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अखिलेश यादव ने हाल के अपने पूर्वांचल दौरे के दौरान अयोध्या में मीडिया से बातचीत में कहा कि श्री आजम खान के खिलाफ गलत मुकदमे दर्ज कराए गए। अखिलेश जी ने कहा कि समाजवादी पार्टी उनके साथ है। हमें कोर्ट पर पूरा भरोसा है और आजम खां छूटकर आएंगे, पूरी समाजवादी पार्टी उनके साथ खड़ी है। वे प्रदेश के प्रतिष्ठित राजनेता हैं। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं। इस समय वह रामपुर से लोकसभा के सदस्य हैं। मौलाना मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय जैसा उच्च शैक्षणिक संस्थान उन्हीं की देन है।

खान ने गुलामी के दौर में बने गेटों को तुड़वा दिया था। इसके बाद तीन नए द्वार बनाए थे जिनके नाम क्रमश: बाब-ए-हयात, बाब-ए-निजात व बाब-ए-इल्म गेट रखे गए थे।

इन गेटों को बहुत ही खूबसूरत तरीके से बनाया गया था। बाब-ए-हयात और बाब-ए-निजात गेट पर स्टील से नाम लिखे गए थे जिसके ऊपर सोने का पानी चढ़ाया गया था ताकि इसमें जंग न लगे। लेकिन समाजवादी सरकार में हुए कार्यो का नाम बदलने के भाजपा सरकार के दस्तूर का सिलसिला रामपुर में भी जारी है। जिला प्रशासन के आदेश से ज्वालानगर स्थित राम रहीम चौक, जहां आजम खान के नाम का पत्थर लगा था, उस पत्थर को भी हटाया गया है। रामपुर में लगी महात्मा गांधी की प्रतिमा का स्थान भी प्रशासन ने बदल दिया है।

इससे पहले स्वार रोड पर बने उर्दू गेट को ध्वस्त कर दिया गया था। समाजवादी सरकार में श्री आजम खान की पहल पर स्वार रोड पर कम ऊंचाई का गेट बनवाया गया था। इसका मकसद स्वार रोड पर बड़े वाहनों की आवाजाही पर रोक लगाना था। सीएंडडीएस (कंस्ट्रक्शन एंड डिजाइन) ने इसका निर्माण किया था। उर्दू गेट को ध्वस्त किए जाने के बाद तत्कालीन सपा विधायक अब्दुल्ला आजम ने तब प्रेस कांफ्रेंस कर कहा था कि गेट का नाम उर्दू गेट था इस वजह से इसको तोड़ा गया। उन्होंने तब यह आरोप भी लगाया था कि योजनाबद्ध तरीके से गेट को गिराया गया है। उर्दू गेट की वजह से खनन के वाहन स्वार रोड पर नहीं आ पाते थे। इस वजह से प्रशासन के लोगों की काली कमाई बंद हो गई थी। इसलिए ऐसे अधिकारियों ने गेट गिरवा दिया।

दरअसल आजम खान साहब की सियासी शख्सियत से खौफजदा भाजपा उन्हें झूठे मामलों में फंसाकर उन्हें प्रताड़ित कर रही है। जबकि उसे यह अहसास भी नहीं कि समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक आजम साहब के साथ संघर्षों का शानदार इतिहास है। उनका एक लंबा राजनीतिक संघर्ष रहा है। भाजपा सरकार ने उनके खिलाफ जो रवैया अख्तियार कर रखा है वे खुद इंगित करते हैं कि सरकार व सत्तारूढ़ पार्टी की मंशा में खोट है।

जानकारों का कहना है कि शासन-प्रशासन की इन हरकतों से श्री आजम खान वह शानदार इतिहास नहीं धुल जाएगा जिसमें वे गए कई दशकों से रामपुर और आस-पास की राजनीति का चेहरा बदल देने वाले नायक के तौर पर नजर आते हैं। वे ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने दशकों लोकतंत्र के लिए संघर्ष किया है। आपातकाल में दो वर्ष तक उन्होंने जेल की यातना सही है।

किसी ने सही ही कहा है:

अटूट पत्थर पर लिखी इबारत हूं मैं,
शीशे से कब तक तोड़ोगे।
मिटनेवाला मैं नाम नहीं, तुम कब
तक मुझको रोकोगे॥

मल्हनी पर फिर लहराया समाजवादी परचम

बुलेटिन ब्यूरो

जौनपुर जनपद की मल्हनी विधानसभा सीट पर समाजवादी परचम लहराने का सिलसिला फिर एकबार जारी रहा।

समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता पारसनाथ यादव के निधन से खाली हुई इस सीट पर हुए उपचुनाव में उनके पुत्र समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी श्री लकी यादव ने जीत हासिल की।

अपने जनपद में पारसनाथ जी की असीम लोकप्रियता के चलते वहां अपनी पूरी ताकत झोंक देने के बावजूद भाजपा पराजित रही। श्री पारसनाथ यादव जौनपुर जनपद के कद्दावर समाजवादी नेता थे। वे राज्य विधानसभा के 7 बार विधायक, 3 बार मंत्री और दो बार लोकसभा सांसद रहे थे।

विधानसभा उपचुनाव में विजयी होने के बाद श्री लकी यादव ने लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद लिया।

श्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार द्वारा तमाम अनियमितताओं के बावजूद श्री लकी यादव के विजयी होने पर उन्हें बधाई दी। उन्होंने मल्हनी क्षेत्र के मतदाताओं को धन्यवाद दिया।

श्री अखिलेश यादव ने लकी यादव को जनता की सेवा करते रहने को कहा एवं सलाह दी कि ऐसा करने पर ही वे 2022 के चुनाव में ज्यादा मतों से विजयी होंगे। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी समाज के सभी वर्गों के कल्याण की नीतियों पर चलती है। भाजपा नफरत और समाज को बांटने का काम करती है। समाजवादियों को उनसे सजग रहना है और उनकी साजिशों का जनता के बीच पर्दाफाश करना है।

#काम बोलता है

समाजवादी पार्टी

सूखा
1. गेहूँ का आटा मात्रा- 10 कि.ग्रा
2. चने की दाल मात्रा-

नोटबंदी की कड़वी यादें और 4 साल का खजांची!

बुलेटिन ब्यूरो

भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा लागू नोटबंदी के चार साल पूरा होने के मौके पर समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में 9 नवंबर 2020 को बालक खजांची का जन्मदिन मनाया गया।

दरअसल नोटबंदी लागू होने वाले वर्ष यानी 2016 में कानपुर देहात के रसूलाबाद क्षेत्र में पंजाब नेशनल बैंक में नोट बदलवाने के लिए लंबी लाइन में लगी महिला ने नवजात शिशु को जन्म दिया था। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने उसका नाम खजांची रखा था।

प्रतिवर्ष जन्मदिन मनाने के क्रम में उसका चौथा जन्मदिन पार्टी कार्यालय, लखनऊ में ढोल नगाड़ों की गूंज के साथ उल्लासपूर्वक मनाया गया। खजांची के जन्मदिन पर केक काटा गया और उसे उपहार दिए गए। श्री अखिलेश यादव तथा पूर्व सांसद श्रीमती डिम्पल यादव की ओर से खजांची को 11-11 हजार रुपए दिए गए। श्री यादव ने उसे मेट्रो रेलगाड़ी की प्रतिकृति वाला

खिलौना भी भेंट किया। कई अन्य विधायकों ने भी उसे उपहार दिए। खजांची का पूरा परिवार समाजवादी पार्टी का अतिथि रहा।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि खजांची की लड़ाई भाजपा सरकार से है। भाजपा हटेगी तभी प्रदेश की समस्याएं मिटेंगी। कानून व्यवस्था भी तभी सुधरेगी। श्री अखिलेश यादव ने याद दिलाया कि 8 नवंबर 2016 को देश में अचानक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नोटबंदी कर दी थी।

इस नोटबंदी से लोगों का घर में रखा पैसा

बैंक में जमा हो गया। लोग तो कंगाल हो गए और अमीर जमा धन लूट कर विदेश भाग गए। देश आर्थिक संकट में फंस गया है। नोटबंदी से व्यापार चौपट हुआ। रोजगार छिन गए। नौजवानों के सपनों को मार दिया गया। देश खुशहाली के रास्ते से पीछे चला गया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भारत में नोटबंदी से देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ती जा रही है। नोटबंदी से उन्हें तकलीफ पहुंची है जिन्होंने कभी कालाधन नहीं बनाया। जिन्होंने कालाधन बनाया वे देश छोड़कर चले गए। चलन में जो रुपया था वही रिजर्व बैंक में वापस आ गया। बाहर का कालाधन वापस नहीं आया। जीडीपी में भारी गिरावट आ गई है। यह अपरिपक्व फैसला था। भाजपा ने साजिशन चुनाव जीतने के लिए यह सब किया। श्री यादव ने कहा कि नोटबंदी से गरीब किसान, नौजवान, को कुछ नहीं मिला। व्यापार खत्म हुआ। भाजपा ने देश की जनता का भरोसा छोड़ दिया है। जनता अब बदलाव के मूड में है।

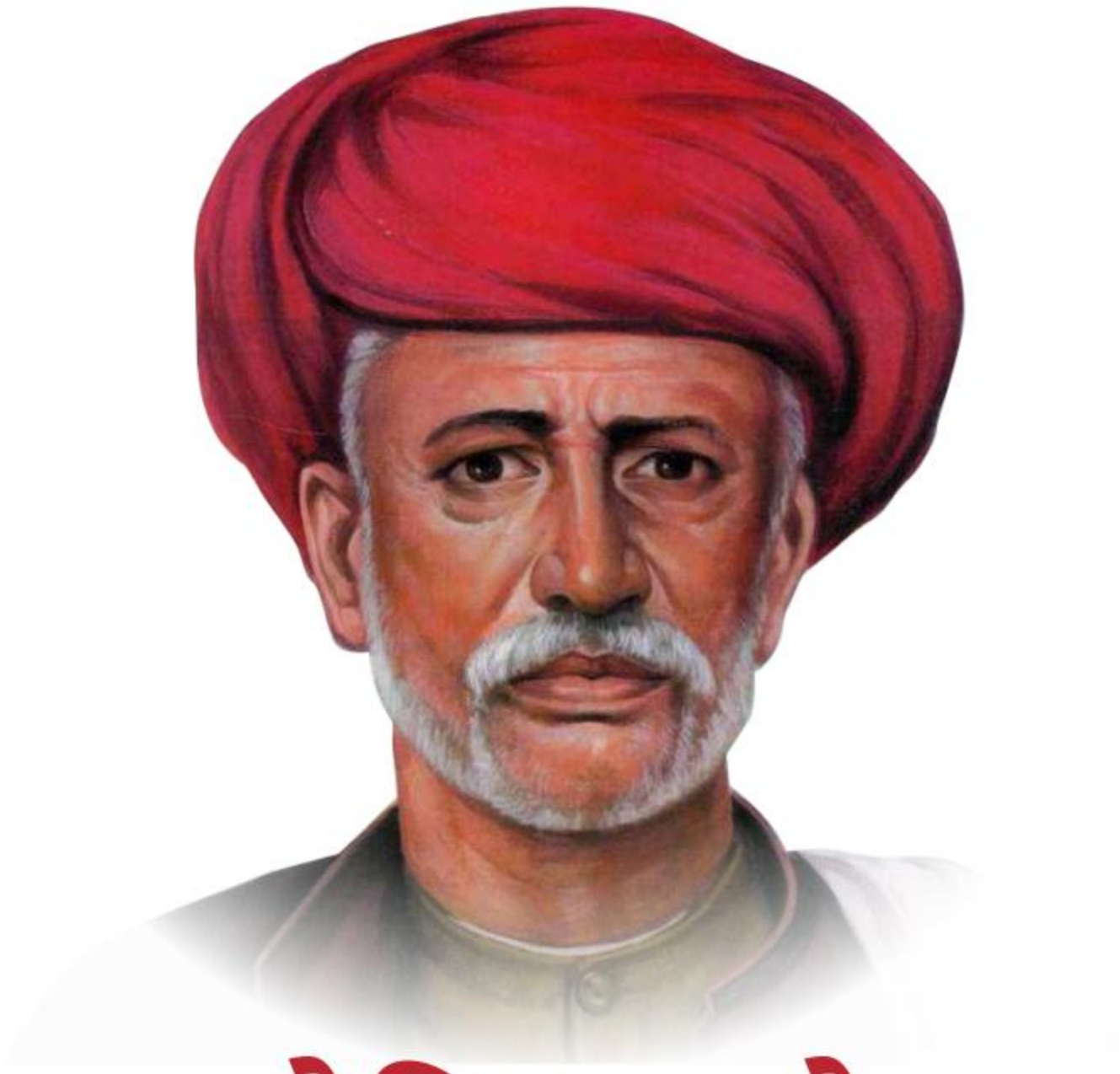

ज्योतिबा फुले

आधुनिक भारत के पहले बहुजन नायक

रविकान्त
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, लखनऊ विवि

महामना ज्योतिबा फुले (1 1 अप्रैल, 1827- 28 नवंबर, 1890) आधुनिक भारत के पहले बहुजन नायक हैं। वे सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन के विचार के प्रवर्तक हैं। शूद्रों-अछूतों की हजारों साल की गुलामी को पहचानने और उसका आलोचनात्मक विश्लेषण करने वाले, वे पहले बहुजन इतिहासकार हुए। वे शुद्रों-अछूतों और स्त्रियों की शिक्षा के उन्नायक हैं। ज्योतिबा फुले के साहित्य और विचारों में

शूद्रों-अछूतों और स्त्रियों की आजादी की मुनादी है।

ज्योतिबा फुले की मृत्यु के एक साल बाद पैदा होने वाले भारत के महानायक डॉक्टर अंबेडकर उनके विचारों से बहुत प्रभावित थे। डॉक्टर अंबेडकर ने महात्मा बुद्ध और कबीर के बाद ज्योतिबा फुले को अपना तीसरा गुरु माना है। डॉक्टर अंबेडकर ज्योतिबा फुले को 'महान शूद्र' संबोधित करके याद करते थे। बाबा साहब ने अपनी किताब 'शूद्र कौन थे?' (1947) ज्योतिबा फुले को समर्पित करते हुए उसमें लिखा है, "जिन्होंने हिंदू समाज की छोटी जातियों को उच्च वर्णों के प्रति उनकी गुलामी की भावना के संबंध में जागृत किया और जिन्होंने सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना को विदेशी शासन से मुक्ति

डॉक्टर अंबेडकर ने महात्मा बुद्ध और कबीर के बाद ज्योतिबा फुले को अपना तीसरा गुरु माना है। डॉक्टर अंबेडकर ज्योतिबा फुले को 'महान शूद्र' संबोधित करके याद करते थे।

को पढ़ने-लिखने का कतई अधिकार नहीं था। थोड़े संपन्न माली जाति के गोविंदराव ने सामाजिक दबाव के कारण बालक ज्योतिराव की पढ़ाई छुड़वाकर अपने पारंपरिक जातिगत पेशे में मदद के लिए घर पर बिठा लिया। इसके बाद 13 साल की उम्र में ज्योतिराव का 9 साल की सावित्रीबाई से विवाह कर दिया गया।

पारंपरिक हिंदू समाज में शूद्रों- अतिशूद्रों और स्त्रियों को पढ़ने- लिखने का अधिकार नहीं था। लेकिन अंग्रेजी हुकूमत के दौर में ईसाई मिशनरियों ने मुख्य रूप से ईसाई धर्म प्रचार के लिए स्कूल खोले। हालांकि, इन स्कूलों में भी अभिजात वर्ग के उच्चवर्णी लड़कों को ही दाखिला मिलता था, लेकिन अन्य जाति के बच्चों की पढ़ाई के लिए कोई कानूनी रोक नहीं थी।

ज्योतिबा फुले की प्रतिभा से प्रभावित होकर ईसाई धर्म प्रचारक लिजीट साहब की सलाह पर गोविंदराव ने उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए स्कॉटिश मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा। यहां पर उनका परिचय पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक विचारों से हुआ।

उन्होंने पाया कि शिक्षा ही गुलामी से मुक्ति का हथियार है। शूद्रों- अछूतों और स्त्रियों को शिक्षा से ही मुक्ति मिल सकती है। पुरुषों और स्त्रियों को समान शिक्षा मिलनी चाहिए। इस उद्देश्य से उन्होंने सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाया। फिर सावित्रीबाई की मदद से 1848 में भारत का पहला लड़कियों का स्कूल खोला। इस स्कूल को चलाने में फातिमा शेख ने भी मदद की। फातिमा शेख ने पहले खुद शिक्षा ली। इसके बाद उन्होंने मुस्लिम लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार सावित्रीबाई भारत की पहली शिक्षिका और फातिमा शेख पहली मुस्लिम शिक्षिका के रूप में इतिहास में दर्ज हो गईं।

ज्योतिबा फुले स्त्रियों के लिए बहुत फ़िक्रमंद थे। बाल विवाह को रोकने के लिए उन्होंने प्रयत्न किए। विधवाओं के लिए आश्रम खोले। ब्राह्मणवादी और पितृसत्तात्मक समाज से मोर्चा लेते हुए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह प्रारंभ किया। उन्होंने एक कदम आगे बढ़कर दबंग मर्दों की शिकार गर्भवती विधवा महिलाओं की जिंदगी को सुरक्षित किया। उनकी अवैध संतानों को जन्म देने और पालने का इंतजाम किया। ऐसी ही एक विधवा ब्राह्मणी के पुत्र को फुले दम्पत्ति ने गोद ले लिया। इसका नाम उन्होंने यशवंतराव रखा। आगे चलकर उन्होंने यशवंत को पुत्र होने के सारे अधिकार दिए।

ज्योतिबा फुले एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। वे समता और न्याय पर आधारित समाज स्थापित करना चाहते थे। ईसाई मिशनरियों से

An old portrait of Savitribai with her husband Jotirao. They were married in 1840.

उन्होंने पाया कि शिक्षा ही गुलामी से मुक्ति का हथियार है। शूद्रों- अछूतों और स्त्रियों को शिक्षा से ही मुक्ति मिल सकती है। पुरुषों और स्त्रियों को समान शिक्षा मिलनी चाहिए। इस उद्देश्य से उन्होंने सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाया। फिर सावित्रीबाई की मदद से 1848 में भारत का पहला लड़कियों का स्कूल खोला।

प्रभावित होकर भारतीय अभिजातवर्ग के सुशिक्षित विचारकों ने सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन चलाए। महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज, पूना सार्वजनिक सभा और आर्य समाज जैसे संगठन सुधार आंदोलन चला रहे थे। लेकिन इनका लक्ष्य केवल हिंदू धर्म की कुरीतियों को दूर करना था। वर्णव्यवस्था समाप्त करना और स्त्री पुरुष असमानता दूर करना इनका उद्देश्य नहीं था। इन समाजों ने ब्राह्मणों की श्रेष्ठता पर भी सवाल नहीं उठाए। ज्योतिबा फुले ने शूद्रों-अतिशूद्रों को पाखंडवाद, ईश्वरवाद से मुक्ति के लिए 24 सितंबर 1878 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्होंने ब्राह्मणवाद, कर्मकांड से मुक्त कर शूद्रों-अतिशूद्रों को नए विकल्प दिए।

ज्योतिबा फुले पहले बहुजन विचारक हैं। उन्होंने शूद्रों- अतिशूद्रों को इस देश का मूलनिवासी सिद्ध किया। गुलामगिरी (1873) किताब में उन्होंने मूल निवासियों की गुलामी और पाखंडवाद का प्रतिकार किया। अछूतों की कैफियत (1885) किताब में उन्होंने दलितों की यातना और पीड़ा भरे इतिहास का मार्मिक वर्णन किया है। इसके अलावा किसान का कोड़ा (1883), तृतीय रत्न नाटक (1855), छत्रपति शिवाजी का पंवड़ा (18 69), ब्राह्मणों की चालाकी (18 69) ज्योतिबा फुले की अन्य चर्चित किताबें हैं। 28 नवंबर 1890 को उनका निधन हो गया। ज्योतिबा फुले के कामों की पूरी जिम्मेदारी सावित्रीबाई के कंधों पर आ गई। जिसे उन्होंने बड़ी शिद्दत के साथ निभाया।

ज्योतिबा फुले आज भी हमारे लिए प्रेरक हैं। उनके विचार पूरे मानव समाज के लिए प्रासंगिक हैं। समतामूलक समाज बनाना उनका मूल उद्देश्य था। आधुनिक शिक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों से ही यह संभव था। इसलिए वे इतिहास, धर्म, वर्ण, ईश्वर जैसी अवधारणाओं को तर्क और विवेक की कसौटी पर कसते रहे। उनका मानना था कि शिक्षा से ही समाज में नई रोशनी आ सकती है। उनके विचारों की मशाल को डा. आंबेडकर ने आगे बढ़ाया। इस मशाल को जलाए रखने और आगे बढ़ाते रहने की जरूरत है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

कल्बे सादिक साहब

हिन्दू-मुस्लिम एकता के अग्रदूत

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 28 नवंबर को यूनिटी कालेज जाकर मरहूम जनाब कल्बे सादिक साहब को श्रद्धांजलि दी और उनके परिवारीजनों से मिलकर हार्दिक संवेदना जताई। इस मौके पर जनाब सादिक साहब के बेटे, दामाद तथा पौत्रों के अतिरिक्त कालेज स्टाफ के सदस्य भी मौजूद थे। कल्बे सादिक साहब का 24 नवंबर को निधन हो गया।

श्री अखिलेश यादव ने जनाब कल्बे सादिक को हिन्दू-मुस्लिम एकता का अग्रदूत बताते हुए कहा कि सामाजिक सद्भाव और सौहार्द बनाए रखने में उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जाएगा। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में उन्होंने प्रशंसनीय काम किया। वे दीनी तालीम के साथ आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा पर विशेष बल देते थे। श्री अखिलेश यादव ने जनाब कल्बे सादिक को याद करते हुए कहा कि दुनिया भर में बतौर धर्मगुरू उनका सम्मान था। उनकी विद्वत्ता के सभी कायल थे। उनका निधन देश की क्षति है।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आय दोगुनी करने का जुमला देकर कृषि क़ानून की आड़ में किसानों की ज़मीन हड़पने का जो षडयंत्र है वो हम खेती-किसानी करनेवाले अच्छे से समझते है. हम अपने किसान भाइयों के साथ हमेशा की तरह संघर्षरत हैं, जिससे एमएसपी, मंडी व कृषि की सुरक्षा करनेवाली संरचना बची-बनी रहे.

भाजपा अब ख़त्म!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र सरकार 'एक्सप्रेस-वे' को अमीर दोस्तों को सौंपने की तैयारी में है। लीज़ पर देकर लोन लेने के घोटाले से सरकार जिन लोगों को फ़ायदा पहुँचाने की कोशिश कर रही है, वो मनमाना टोल वसूलकर जनता का शोषण ही करेंगे। सपा की सरकार आने पर इस महाघोटाले की जाँच होगी।

ये सरकार है या सेल्समैन!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सरकार की विनाशकारी कृषि नीति के विरूद्ध अपना विरोध प्रकट करने के लिए अन्नदाता किसानों के ख़िलाफ़ भाजपा सरकार आँसू गैस व वाटर कैनन जैसे हिंसक मनोवृति के साधनों से प्रहार कर रही है. घोर निंदनीय!

अमीरों की पक्षधर भाजपा ग़रीब हलधर का दर्द क्या जाने!

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

रातें कर दीं हैं उनकी काली, जो भरते सबकी थाली हैं
उनसे मिलने का वक़्त नहीं, पर ढोंग के उत्सव जारी हैं

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

नेता जी के जन्मदिन पर उन उनके स्वस्थ जीवन की कामना करनेवाले व बधाई देने वाले सभी लोगों, समर्थकों और कार्यकर्ताओं का धन्यवाद!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

बेरोज़गारी की मार झेल रहे उप्र के लोग कोरोना के दुबारा विस्फोट होने के बावजूद भी भूखमरी से बचने के लिए प्रदेश से बाहर जाने के लिए मजबूर हैं. 'स्किल मैंपिंग' का जुमला देनेवाली भाजपा सरकार प्रदेशवासियों को काम तो क्या, दो वक़्त की रोटी भी नहीं दे पा रही है.

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

किसानों को आतंकवादी कहकर अपमानित करना भाजपा का निकृष्टतम रूप है. ये अमीरों की पक्षधर भाजपा का खेती-खेत, छोटा-बड़ा व्यापार, दुकानदारी, सड़क, परिवहन सब कुछ, बड़े लोगों को गिरवी रखने का षड्यंत्र है.

अगर भाजपा के अनुसार किसान आतंकवादी हैं तो भाजपाई उनका उगाया न खाने की कसम खाएं.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Rest in peace Diego Armando Maradona — one of the best players ever. You will be missed
#Maradona

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या LW/NP-300/2018-2020

हिंदुस्तान की जान

जय किसान

समाजवादी पार्टी

www.samajwadiparty.in